ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-9 अंक : 104

सहयोग शुल्क : रु. 1 / सितम्बर : 2025

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

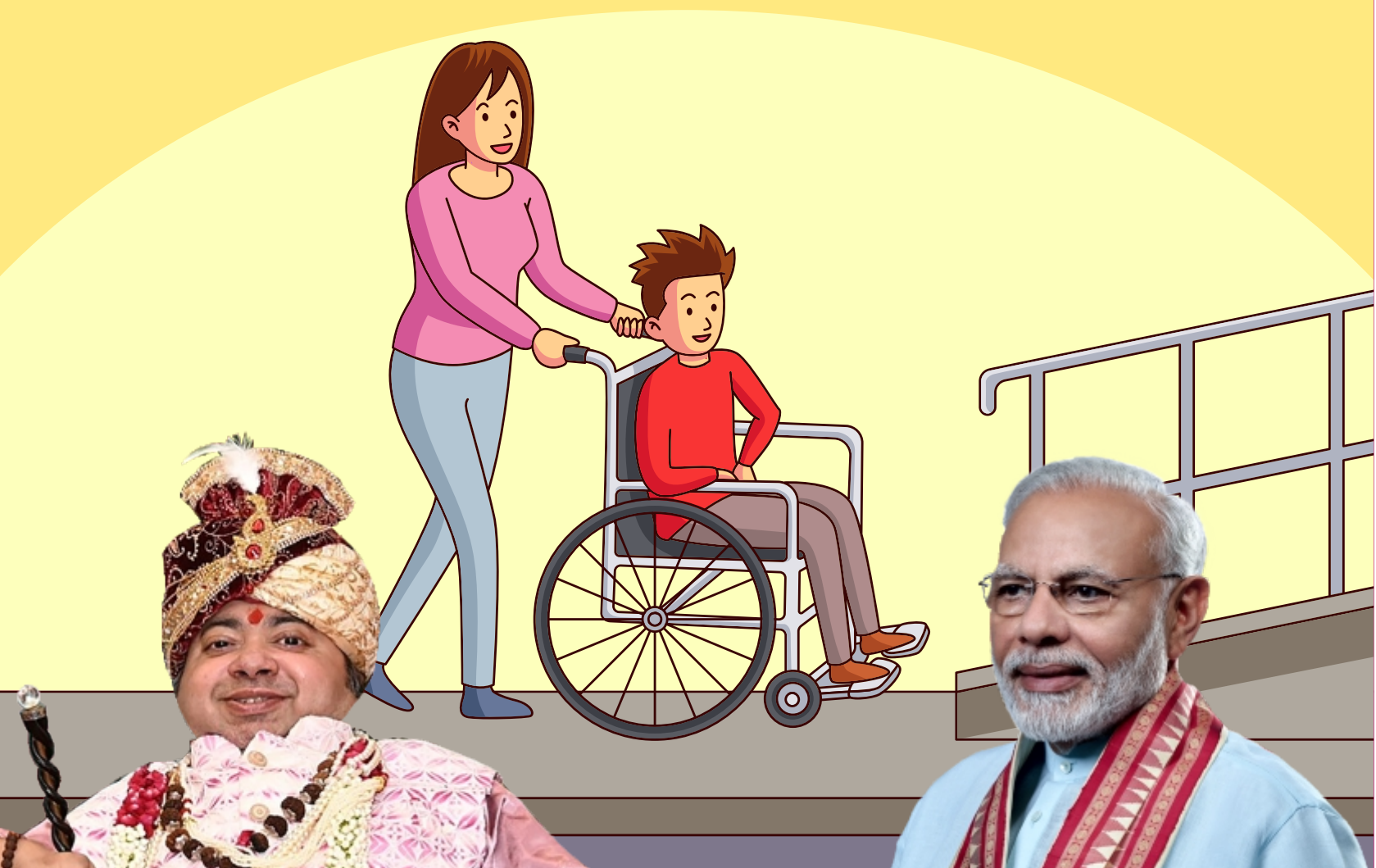

गीरीश शर्मा जुनून, दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत से मिलने वाली सफलता की कुंजी का पर्याय है ।

– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

अपनी कमज़ोरियों को पहचानकर अपनी खूबियों को इतना मज़बूत बनाएँ कि कोई आपको हरा न सके ।

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

गिरीश शर्मा हमें प्रेरणा देते हैं कि जीवन में भले ही हमारे पास कोई कमजोरी हो लेकिन अगर हम दिल से चाहे और मेहनत करें तो जीवन में बड़ी से बड़ी कमजोरी भी हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएगी और हम सफलता प्राप्त कर सकेंगे। हमें हमारे सपनों को पूरा करना हैं तो कभी भी अपनी कमजोरी को नहीं देखना चाहिए और लगातार प्रयत्न करना चाहिए हमें हमारी मंजिल जरुर मिलेगी। गिरीश शर्मा ने आज की युवा पीढ़ी को एक उदाहरण प्रस्तुत किया है कि अगर सीने में आगे बढ़ने का हौसला हो तो बड़ी से बड़ी कमजोरी हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती। ऐसे लोग जीवन में संघर्ष के द्वारा खुद तो सफल होते ही दूसरों को भी सफल होने की प्रेरणा देते हैं।

जो व्यक्ति एक पैर से ठीक से चल भी नहीं पाता उसने जब बैडमिंटन खेलने का सपना अपने दोस्तों को, अपने परिवार वालों को बताया होगा तो जरूर ही उन्हें यह बात असंभव लगी होगी कि एक पैर के सहारे बैडमिंटन गेम कैसे खेल सकता है लेकिन सभी के कहने पर भी वो नहीं रुके। इसके बावजूद भी गिरीश शर्मा जी ने अपने हौसले और अपनी लगातार किए हुए प्रयत्न से एक बहुत बड़ी कामयाबी हासिल की और इनको अभी और भी आगे जाना है। गीरीश शर्मा के सामने केवल शारीरिक असमर्थता या संघर्ष नहीं था उनके सामने सरकारी व्यवस्था से सहाय ना मिलना भी एक बड़ी चुनौती और संघर्ष था लेकिन उन सभी बाधाओं को पार कर उन्होंने सफलता को चूमा है।

गीरीश शर्मा हमें प्रेरणा देते हैं कि यदि हमारे मन में कुछ पा लेने का जज्बा होगा तो हमारे लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

सितम्बर : 2025, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष-9 अंक : 104

✦ प्रेरणास्त्रोत और संपादक ✦

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्‌गुरु ॐऋषि स्वामी।

✦ सह-संपादक ✦

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

एक पैर वाले बैडमिंटन चैंपियन गिरीश शर्मा की कहानी आपको प्रोत्साहित करेगी और आपका दिल भी तोड़ देगी

गिरीश कुमार की जीवनी आपके जीवन को बदल सकती है। गिरीश कुमार एक बैडमिंटन खिलाड़ी हैं जब ये 2 साल के थे तभी एक रेल दुर्घटना के कारण इनका एक पैर टूट गया था जिस वजह से वह सिर्फ एक पैर पर खड़े होकर बैडमिंटन खेलते हैं। ये एक बहुत ही हैरानी की बात है की कोई भी व्यक्ति बैडमिंटन अपने दोनों पैरों पर खड़े होकर खेलता है तो भी उसको पसीने आ जाते हैं लेकिन वह एक पैर पर खड़े होकर बैडमिंटन खेलते हैं और जीतते भी हैं। वह बचपन में एक पैर ना होने के बावजूद भी फुटबॉल, क्रिकेट, बैडमिंटन जैसे खेल खेला करते थे।

गिरीश शर्मा जी का कहना है कि उन्हें सामान्य बच्चों के साथ भी ये खेल खेलने में कोई भी परेशानी नहीं होती थी वह शुरू से ही एक पैर से खेल खेलने का अभ्यास निरंतर करते थे। वह राजकोट में बहुत ही तेजी से साइकिल भी चलाते थे जिन्हें देखकर लोगों को बहुत ही हैरानी होती थी। वह अपने आपको किसी भी तरह से कमजोर ना समझकर लगातार प्रयत्न करते थे इसी के साथ निरंतर अभ्यास करने के बाद उन में परफेक्शन आ गई। जब ये 16 साल के हुए तभी से उन्होंने एक बैडमिंटन बनने का फैसला कर लिया था इसके लिए उन्होंने बैडमिंटन का प्रशिक्षण भी लिया और इसके बाद उन्होंने नेशनल लेवल पर बैडमिंटन खेला जिसमें उन्होंने जीत हासिल की और 2 स्वर्ण पदक प्राप्त किए। लेकिन वो वहीं पर नहीं रुके उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत और लगन से इंटरनेशनल लेवल पर बैडमिंटन खेलने का फैसला किया इसके लिए उन्हें कुछ रुपयों की जरूरत थी। गिरीश शर्मा जी ने अपने दम पर रुपयों की व्यवस्था की और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बैडमिंटन खेला। वह बहुत से देशों में बैडमिंटन खेल चुके हैं।

गिरीश शर्मा हमारे लिए एक ऐसा उदाहरण है जो हमें प्रेरणा देते हैं कि जीवन में भले ही हमारे पास कोई कमजोरी हो लेकिन अगर हम दिल से चाहे और मेहनत करें तो जीवन में बड़ी से बड़ी कमजोरी हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएगी और हम सफलता प्राप्त कर सकेंगे। हमें भी कभी अपनी कमजोरी को नहीं देखना चाहिए और लगातार प्रयत्न करना चाहिए हमें हमारी मंजिल जरुर मिलेगी, हम अपने सपनों को पूरा

जरूर कर सकेंगे । गिरीश शर्मा जी वाकई में एक ऐसे जीते जागते उदाहरण हैं जिन्होंने आज की युवा पीढ़ी को एक उदाहरण प्रस्तुत किया है कि अगर सीने में आगे बढ़ने का हौसला हो तो बड़ी से बड़ी कमजोरी आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगी । ऐसे लोग जीवन में संघर्ष के द्वारा खुद तो सफल होते ही दूसरों को भी सफल होने की प्रेरणा देते हैं ।

गिरीश शर्मा जी ने जब बैडमिंटन खेलने का सपना अपने दोस्तों को,अपने परिवार वालों को बताया होगा तो जरूर ही उन्होंने उनका मजाक उड़ाया होगा क्योंकि ये एक अजीब सी बात होती है की जिस व्यक्ति को सही से चलते हुए ना बने वो बैडमिंटन गेम कैसे खेल सकता है लेकिन सभी के कहने पर भी वो नहीं रुके । इसके बावजूद भी गिरीश शर्मा जी ने अपने हौसले और अपनी लगातार किए हुए प्रयत्न से एक बहुत बड़ी कामयाबी हासिल की और इनको अभी और भी आगे जाना है । दोस्तों हम सभी को भी इनसे प्रेरणा लेकर इनकी तरह कुछ खास करना चाहिए ।

मूल रूप से राजस्थान के रहने वाले गिरीश शर्मा का जन्म और पालन-पोषण राजकोट, गुजरात में हुआ । उन्होंने चौदह साल की उम्र में खेलना शुरू किया और एक साल के भीतर ही दिव्यांग वर्ग में दुनिया के दूसरे नंबर के खिलाड़ी बन गए ।

2007 में, वह अपने माता-पिता और दो भाइयों को राजकोट में छोड़कर ठाणे चले गए । वहाँ, उन्होंने दादोजी कोंडदेव स्टेडियम स्थित ठाणे नगर निगम की सैयद मोदी बैडमिंटन अकादमी में दाखिला लिया । अकादमी ही उनके दैनिक खर्चे वहन करती है । भारत में एकल और युगल दोनों शारीरिक रूप से अक्षम वर्गों में दूसरे स्थान पर रहने वाले शटलर गिरीश शर्मा, यह जानकर बहुत खुश हुए कि उन्हें ग्वाटेमाला सिटी में 2011 पैरा-बैडमिंटन विश्व चैंपियनशिप में देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया है ।

वह राजकोट शहर के भारी यातायात वाले क्षेत्रों में भी बिना किसी समस्या के पूरे आत्मविश्वास के साथ तेजी से साइकिल चलाते हैं । उन्होंने भारत में आयोजित विकलांगों के लिए पैरा ओलंपिक एशिया कप में स्वर्ण पदक जीता है । उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व भी किया है और इज़राइल और

थाईलैंड जैसे अन्य देशों में खेला है । लेकिन चौंकाने वाला सच यह है कि, उन्हें राज्य सरकार या भारत सरकार से कोई आर्थिक मदद नहीं मिलती है। इस तरह के आयोजन में भाग लेने के लिए लगभग 80,000 रुपये (लगभग US$1600) खर्च होते हैं, जिसमें प्रवेश शुल्क और आने-जाने का हवाई किराया शामिल है । गिरीश शर्मा की वित्तीय स्थिति इतनी अच्छी नहीं यह जानना एक शर्मनाक सच्चाई है कि भले ही वह भारत में विकलांगों के लिए नेतृत्व करते हैं, देश के लिए खेलते हैं और स्वर्ण पदक अपने साथ लाते हैं, फिर भी उन्हें पहचान नहीं मिलती ।

लेकिन 24 वर्षीय खिलाड़ी को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि भारतीय बैडमिंटन खेल संघ चाहता था कि वह 22-26 नवंबर को होने वाले टूर्नामेंट के लिए स्वयं धन की व्यवस्था करे । शर्मा द्वारा बैंगलोर में राष्ट्रीय चैंपियनशिप में रजत पदक जीतने के बाद, एसोसिएशन ने उन्हें एक पत्र भेजा, जिसमें कहा गया था कि उन्होंने उन्हें विश्व चैंपियनशिप में देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना है ।

लेकिन एसोसिएशन ने यह भी लिखा कि उन्हें यात्रा, आवास और दैनिक खर्चों सहित अपने खर्चों को पूरा करने के लिए 1,70,125 रुपये का इंतजाम करना होगा । शर्मा इतनी रकम वहन नहीं कर सकते, लेकिन उनके दोस्त, साथी खिलाड़ी और कोच उनकी मदद के लिए आगे आ रहे हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि वह यह खिताब जीतें ।

गिरीश शर्मा जैसे दिव्यांग चैंपियन सरकार से करोड़ों रुपये नहीं मांगते । कुछ लाख रुपये ही काफी होंगे । और उन्हें यह राज्य या राष्ट्रीय सरकार से मिलना ही चाहिए । आख़िरकार, वह भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं और उसके लिए स्वर्ण पदक लाते हैं ।

तमाम बाधाओं को पार करते हुए, दिव्यांग भारतीय एथलीट अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अपनी चमक बिखेरने में कभी असफल नहीं हुए हैं । लेकिन दुख की बात है कि हमारे चैंपियनों को निराश करने वाली हमारी सरकार है । दशकों से, दिव्यांग एथलीटों को नज़रअंदाज़ किया गया है, उन्हें मुश्किल से ही धन दिया जाता है और उनकी योग्यता को

मान्यता नहीं दी जाती। गिरीश शर्मा भी ऐसे ही एक और उत्कृष्ट खिलाड़ी हैं, जिन्हें भारतीय खेल अधिकारियों ने उनकी विश्वस्तरीय योग्यता के बावजूद नज़रअंदाज़ कर दिया।

केवल एक पैर होने के बावजूद, गिरीश शारीरिक रूप से विकलांग एथलीटों की एकल और युगल दोनों श्रेणियों में (भारत में) दूसरे स्थान पर हैं।

गिरीश शर्मा के बारे में पांच रोचक तथ्य:

1. उन्होंने भारत में आयोजित पैरा ओलंपिक एशिया कप फॉर डिसेबल्ड में स्वर्ण पदक जीता।
2. उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व भी किया है तथा इज़राइल और थाईलैंड जैसे अन्य देशों में भी खेला है।
3. उन्होंने मई 2009 में जर्मनी में आयोजित होने वाली विश्व चैंपियनशिप में भाग लिया।
4. उन्होंने शारीरिक रूप से विकलांगों के लिए राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में दो स्वर्ण पदक अर्जित किए हैं।
5. इसके तुरंत बाद, उन्होंने इज़राइल (एकल और युगल दोनों में 2 रजत पदक जीते) और थाईलैंड में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उनकी अब तक की सबसे बड़ी जीत पैरालिंपिक एशिया कप फॉर डिसेबल्ड में स्वर्ण पदक है।

गिरीश की कहानी से सीखने योग्य पाँच सबक:

1. विपरीत परिस्थितियों से लड़ना और उन्हें हराना।
2. संसाधनों की कमी के कारण खुद को कभी भी सीमित न होने दें। जहाँ इच्छाशक्ति होती है, वहाँ प्रशिक्षण के लिए आवश्यक संसाधनों का प्रबंधन भी हो

जाता है।

3. हो सकता है कि आप गरीब पैदा हुए हों, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आपको ज़िंदगी भर गरीब ही रहना है। आपके सपने और उन्हें पूरा करने के लिए उठाए गए दृढ़ कदम ही आपके जीवन में बदलाव लाएँगे।

4. जुनून, दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत ही सफलता की कुंजी है। सफलता तुरंत नहीं मिलती, लेकिन अंततः मिलती है। बस उस विशिष्ट क्षेत्र में धीरे-धीरे प्रगति करते हुए, उस मार्ग पर चलते रहें।

5. अपनी कमज़ोरियों को पहचानें और अपनी खूबियों को इतना मज़बूत बनाएँ कि कोई आपको हरा न सके। अपना S W O T विश्लेषण करें, ताकि आप अपनी खूबियों, कमज़ोरियों, ख़तरों और अवसरों की पहचान कर सकें।

प्रारंभिक जीवन और दुर्घटना

एक जीवंत कहानीकार, गिरीश शर्मा हमें सिखाते हैं कि परिस्थितियाँ हमारी क्षमता को परिभाषित नहीं करतीं। मात्र दो साल की उम्र में, उन्होंने एक रेल दुर्घटना में अपना एक पैर खो दिया। कई लोगों के लिए, यह एक बहुत बड़ा झटका होता। विकलांग होने का एहसास अक्सर लोगों को यह विश्वास दिला देता है कि वे वह नहीं कर सकते जो दूसरे कर सकते हैं।

विकलांगता पर काबू पाना

हालाँकि, गिरीश की सोच अलग थी। उन्होंने अपनी विकलांगता को कभी अपने सपनों को साकार करने में बाधा नहीं बनने दिया। वे कहते हैं, "जब मैं बच्चा था, तो अपनी उम्र के सामान्य बच्चों के साथ क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन खेलता था। मेरी विकलांगता मेरे ज़हन में ज़रा भी नहीं थी। मुझे उन खेलों में उतना ही मज़ा आता था जितना एक सामान्य व्यक्ति को आता है।" उनका यह जज्बा वाकई प्रेरणादायक है।

खेल में उपलब्धियां

गिरीश ने भारत में आयोजित दिव्यांग पैरालंपिक एशिया कप में स्वर्ण पदक जीता है। उन्होंने इज़राइल और थाईलैंड जैसे देशों में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया है। मई 2009 में, उन्होंने जर्मनी में होने वाली विश्व चैंपियनशिप में भाग लेने की योजना बनाई थी।

समर्थन की कमी

अपनी उपलब्धियों के बावजूद, गिरीश को राज्य या राष्ट्रीय सरकार से कोई आर्थिक मदद नहीं मिलती। किसी भी आयोजन में भाग लेने पर लगभग 80,000 रुपये (लगभग 1600 अमेरिकी डॉलर) का खर्च आता है, जिसमें प्रवेश शुल्क और उड़ान शुल्क शामिल हैं। उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, और वे सारा खर्च खुद उठाते हैं। यह शर्मनाक है कि भारत में विकलांगों के लिए काम करने वाले और स्वर्ण पदक जीतने के बावजूद, उन्हें अब तक मान्यता नहीं मिली है।

मान्यता की आवश्यकता

क्रिकेट खिलाड़ियों को सरकार से अच्छी-खासी आर्थिक मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, जब भारत ने दक्षिण अफ्रीका में ट्वेंटी-2 0 विश्व चैंपियनशिप जीती थी, तो हर राज्य सरकार ने खिलाड़ियों को अच्छी-खासी आर्थिक मदद देने की घोषणा की थी। गिरीश कहते हैं, "मैं करोड़ों रुपये नहीं, बल्कि कम से कम कुछ लाख रुपये की मांग कर रहा हूँ। इससे मुझे भारत और दुनिया भर में होने वाली विभिन्न चैंपियनशिप में भाग लेने में वाकई मदद मिलेगी।"

समर्पण और प्रतिभा

गिरीश रोज़ छह घंटे ट्रेनिंग करते हैं। एक मज़बूत पैर से, वह कोर्ट में घूमते हैं और लगातार शटलकॉक मारते रहते हैं। उन्हें बैडमिंटन खेलते देखना वाकई अद्भुत है। वह विकलांग नहीं लगते; वह एक आम इंसान की तरह खेलते हैं। जब मैंने उनके साथ कुछ शॉट खेले, तो ऐसा लगा जैसे किसी आम प्रतिद्वंद्वी से मुकाबला कर रहे हों। वीडियो में उनकी प्रतिभा साफ़ दिखाई दे रही है।

प्रायोजन के लिए संघर्ष

जब गिरीश कंपनियों से स्पॉन्सरशिप मांगते हैं, तो वे अक्सर पूछते हैं, "आपके खेल कौन देखता है?" यह सवाल वाकई अपमानजनक है। ओलंपिक के बाद होने वाले पैरालिंपिक में तैराकी, टेबल टेनिस और कई अन्य खेल शामिल होते हैं। हालाँकि, भारत में केवल क्रिकेट को ही व्यापक स्वीकृति मिलती है, जबकि अन्य खेलों को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है।

निष्कर्ष

गिरीश शर्मा जैसे दिव्यांग चैंपियन सरकार से करोड़ों रुपये नहीं मांगते। कुछ लाख रुपये ही काफी होंगे। उन्हें राज्य या राष्ट्रीय सरकार से मदद मिलनी ही चाहिए। आख़िरकार, वे भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं और उसके लिए स्वर्ण पदक लाते हैं।

★★★

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांग बच्चों के लिए फन एण्ड गेम्स कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 20 अगस्त के दिन पालडी के अन्नपूर्णा होल में दिव्यांग बच्चों के लिए फन एण्ड गेम्स का सुंदर आयोजन किया गया था । इस कार्यक्रम में 70 से अधिक बच्चों ने बडे उत्साह के साथ हिस्सा लिया था । इस आयोजन में ओमकार फाउन्डेशन ट्रस्ट के स्थापक परम पूजनीय ओमगुरु ने उपस्थित रहकर प्रतिभागी बच्चों का उत्साह वर्धन किया था । कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्राकट्य के साथ हुई । विभिन्न खेलों में 1 मिनिट्स गेम्स का आयोजन किया था जिस में कप पिरामिड, बटन सोर्टिंग, रोल बोल्स और वोटर कप जैसे विभिन्न खेलों में बच्चों ने उत्साह के साथ हिस्सा लिया था । इस प्रकार के खेल बच्चों की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं । खेलों की पूर्णाहूति के बाद बच्चों के लिए नाश्ते की व्यवस्था की गई थी ।

इस प्रकार के खेलों के आयोजन से दिव्यांग बच्चों का उत्साह वर्धन होता है । इस तरह के खेलों से बच्चों का समाज की मुख्य धारा में प्रवेश सरल हो पाता है । सभी बच्चों ने इस खेल कार्यक्रम में बड़े उत्साह के साथ हिस्सा लिया ।

Omkar Foundation Trust (NGO)
for Intellectual Disabled
Organised

Omkar Foundation Trust (NGO)
FUN & GAMES
(Minute to Win It)

Omkar Foundation Trust (NGO)
FUN & GAMES

Omkar Foundation Trust (NGO)
FUN & GAMES
(Minute to Win It)

Organised
FUN & GAMES
(Minute to Win It)

FUN & GAMES
(Minute to Win It)
Date : 20/8/2025, Wednesday

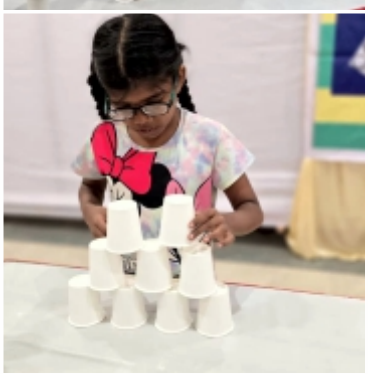

FUN & GAM
(Minute to Win It)
Date : 20/8/2025, Wednesday
Omkar Foundation Trust (NGO)
for Intellectual Disabled
Organised
FUN & GAMES
(Minute to Win It)

मानसी राजपूत ने स्पेशियल ओलम्पिक में लोन टेनिस में तीसरा स्थान प्राप्त कर देश को दिलाया गौरव

समाज विकास ट्रस्ट के एथलिट मानसी राजपूत गुजरात टीम में लोन टेनिस (नेशनल चेम्पियनशिप) अहमदाबाद की खिलाडी ने स्पेशिय ओलम्पिक की प्रतियोगिता में तीसरा स्थान प्राप्त कर के मेडल और प्रमाणपत्र प्राप्त करने के अवसर पर कोच एवं अन्य सभी खिलाडियों को अभिनंदन। स्पेशियल ओलम्पिक में लोन टेनिस में शानदार प्रदर्शन कर के केवल अहमदाबाद ही नहीं किंतु गुजरात राज्य और समग्र भारत देश को गौरव प्रदान करने के इस अवसर पर समाज विकास ट्रस्ट के मेनेजिंग ट्रस्टी श्री इलेशभाई रावल ने सभी को शुभकामनाएँ प्रदान की है। स्पेशियल ओलम्पिक प्रतियोगिता में सुंदर प्रदर्शन कर के देश का नाम रोसन करने वाले सभी खिलाडियों को अभिनंदन और शुभकमानाएँ।

14 अगस्त को डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल में मनाया राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस

स्पेस एप्लिकेशन सेन्टर इसरो द्वारा आर्यभट्ट से गगनयान – प्राचीन ज्ञान से अनंत संभावनाएँ के थीम पर राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिन 2025 का सुंदर आयोजन किया गया था। 14 अगस्त 2025 के दिन राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिन का आयोजन किया जाता है । अहमदाबाद के अखबारनगर- वाडज स्थित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल नवजीवन ट्रस्ट मेमनगर में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिन का सुंदर आयोजन किया गया था । सुबह के 10-30 बजे लेकर 1-00 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था।

चंद्ररयान-3 के चांद पर सफल लेन्डिंग की स्मृति में इस दिन को मनाने का भारत सरकार ने फैसला लिया है। 23 अगस्त 2023 के दिन चंद्र के दक्षिण ध्रुव पर चंद्र की सतह पर विक्रम लेन्डर का सलामती के साथ सोफ्ट लेन्डिंग किया गया था। इस के बाद वहाँ प्रज्ञान रोवर को स्थित किया गया था। पूरे विश्व में ऐसी सफलता प्राप्त करने वाला भारत एक मात्र देश बन गया है। भारत की इस अप्रतिम सफलता से पूरा विश्व अचंभित हो गया था। हमारे देश के अवकाश विज्ञानियों की मेहनत के कारण पूरे विश्व में भारत ने अपना नाम रोशन किया था। इसरो की इस अप्रतिम सफलता को हमेशा के लिए स्मृति में रखने के लिए हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने 23 अगस्त को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिन के रूप में मनाने की घोषणा की थी। चंद्र की जिस सतह पर सफल लेन्डिंग हुआ था उसका नाम भी शिव-शक्ति बिंदु रखा गया है।

23 अगस्त 2024 के दिन भारत मंडपम में इसरो द्वारा आयोजित प्रथम राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिन का पर्व मनाया गया था। इस अवसर पर हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ साथ विभिन्न संस्थाओं के महानुभाल उपस्थित रहे थे। इस कार्यक्रम के कई छात्र प्रेक्षक थे।

इसरो अंतरिक्ष विभाग द्वारा इस वर्ष 23 अगस्त 2025 को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिन नयी दिल्ली स्थित भारत मंडपम में मनाया जायेगा। इसके साथ साथ पूरे देश में इस अवसर को मनाने का नेतृत्व इसरो द्वारा देश के 7 इसरो लीड सेन्टर पर किया जाएगा।

स्पेस एप्लिकेशन सेन्टर को पश्चिम झोन लीड सेन्टर के रूप में विभिन्न प्रवृत्तियों और कार्यक्रमों का आयोजन करने की जिमेमदारी सौंपी गई है । जिस में पंजाब, हरियाणा. चंदीगढ, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, दमण-दीव, दादरा नगर हवेली में भी इन कार्यक्रमों का नेतृत्व किया जाएगा । PRL, MCF भोपाल RRSC-W जोधपुर और INSPACE SAC के सहयोगी केन्द्रों के रूप में है (DES समेत सम्मिलित है) . SAC के डिरेक्टर श्री निलेश देसाई इन कार्यक्रमों के लिए मार्गदर्शके रूप में कार्यरत है।

मनोदिव्यांग छात्रों ने मनाया राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस

१४ अगस्त के दिन डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर स्पेशियली एबल्ड चिल्ड्रन में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिन २०२५ का आयोजन किया गया था । नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट के साथ सहयोग कर के राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाने का सुंदर आयोजन करने के लिए नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट ऋणी रहेगा ।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस का उद्घाटन माननीय मेनेजिंग ट्रस्टी श्री सुभाष आप्टे द्वारा किया गया था । श्री जयप्रसाद पी. हेड GSD, SAC ने NSpD के विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में संक्षिप्त में जानकारी दी थी । साथ ही उन्होंने अतरिक्ष से संबंधित विभिन्न एप्लिकेशन के बारे में रोचक जानकारी प्रदान की थी । श्रीमती संपा रोय हेड , ITID, SAC ने छात्रों को संबोधित करते हुए उन्हें मनुष्य और देश एवं समाज के लाभ और उपयोग के लिए अंतरिक्ष का क्या महत्व है इस बारे में जानकारी प्रदान की थी । श्री निलेश पंचाल ने ISRO- कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि और बच्चों का स्वागत किया था ।

कार्यक्रम में उपस्थित बच्चों ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम पर बनी दस्तावेजी फिल्म देखी थी । विश्व और मनुष्य जाति के विकास में अंतरिक्ष का क्य महत्व है यह जानकारी प्राप्त कर बच्चों ने स्वयं को भाग्यशाली माना था । नवजीव चेरीटेबल ट्रस्ट के लिए यह आयोजन केवल एक दिन मनाने का ही आयोजन या आउटरिच कार्यक्रम नहीं था । किंतु अंतरिक्ष विज्ञान को सभी के लिए सुलभ बनाने की एक पहल थी ।

मनोदिव्यांग लाभार्थियों का प्रि राखी सेलिब्रेशन

नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ.हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फोर इन्टेलेक्च्युअल डिसेबल्ड के मनो दिव्यांग छात्रों ने लीओ कलब ऑफ कर्णावती ग्रेटर और लायन्स क्लब ऑफ अहमदाबाद कर्णावती के सदस्यों के साथ राखी पर्व का सुंदर आयोजन किया था । इस अवसर पर क्लब के सदस्यों ने छात्रों को राखी बांधकर उन्हें उपहार दिया था।

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

संचालित (N.G.O.)

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए नि:शुल्क तालीम संस्था

▲ World Autisum Day ▲Table Tennis Competition ▲ Painting Competition ▲Sports Day Celebration
▲Rakshabandhan Celebration ▲ 15th August Celebration ▲Janmashtami Celebration
▲ Anand Niketan School Visit ▲ Picnic ▲ Traffic Awareness Program Navratri Celebration

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर